(MIJ) 2016, Vol. No. 2, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

STUDY OF THE IMPACT OF MULTIPLE MEDIUM APPROACH ON PERSONALITY AND ACADEMIC ACHIEVEMENT OF STUDENTS

Dr. Padma Shri

Teacher Education Department, Vardhman College, Bijnor, Uttar Pradesh

बहुमाध्यम उपागम का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ0 पद्म श्री

शिक्षक शिक्षा विभाग , वर्धमान कॉलेज, बिजनौर, उत्तर प्रदेश

ABSTRACT

Nature is constantly changing. The effect of change on everything can be easily seen. The teaching process is also not beyond this change. Today's era is a technology-intensive era, so, the need for new technology based teaching method is felt as compared to the traditional method of teaching. Therefore, the researcher has studied the effect of the multi-media approach on the personality and academic achievement of the students. Progressive research method was used in the study. By making two groups of 100 students (50-50) of class 11th, one group was taught based on the traditional method of teaching and the other group based on the multimedia approach. On the basis of statistical analysis, the teachers found the suitability of the multi-media approach and the academic achievement of the students also increased. Multimedia approach has had a positive impact on the personality of the students. Therefore, in order to make classroom teaching interesting and effective, multi-media approach based teaching is beneficial for the students as compared to the traditional method of teaching.

सारांश

प्रकृति नित्य परिवर्तनशील है। प्रत्येक वस्तु पर परिवर्तन का प्रभाव सहज ही देखा जा सकता है। शिक्षण प्रक्रिया भी इस परिवर्तन से परे नहीं है। आज का युग तकनीक प्रधान युग है अतएव परम्परिक शिक्षण विधि की तुलना में नवीन तकनीक आधारित शिक्षण विधि की आवश्यकता महसूस होने लगी है, इसीलिये शोधकर्ता ने बहुमाध्यम उपागम का

विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया है। अध्ययन में प्रयोगात्मक शोध विधि का उपयोग किया गया। कक्षा ग्यारहवीं के 100 विद्यार्थियों के दो समूह (50-50 के) बनाकर एक समूह को परम्परागत शिक्षण विधि व दूसरे समूह को बहुमाध्यम उपागम पर आधारित शिक्षण किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर शिक्षकों ने बहुमाध्यम उपागम की उपयुक्तता पायी गयी व छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि भी बढ़ी। बहुमाध्यम उपागम का प्रभाव छात्रों के व्यक्तित्व पर सकारात्मक पड़ा है। अतएव कक्षा शिक्षण को रोचक व प्रभावपूर्ण बनाने के लिये बहुमाध्यम उपागम आधारित शिक्षण परम्परागत् शिक्षण विधि की तुलना में छात्रों के लिए लाभप्रद है।

प्रस्तावना (Introduction) -

किसी भी देश की आर्थिक समृद्धि में विज्ञान और तकनीक का महत्वपूर्ण योगदान होता है, यह तथ्य वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में स्पष्टतः दृष्टिगोचर हो रहा है नई पीढ़ी अपनी खोजी प्रवृति के कारण पूर्व ज्ञान के आधार पर नित नये आविष्कारों को जन्म दे रही है। इन आविष्कारों की श्रृंखला में "कक्षा शिक्षण अध्ययन-अध्यापन में बहुमाध्यम उपागम" के प्रयोग का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान परिदृश्य में इसने शिक्षा के परिक्षेत्र को प्रभावित किया है तथा यह शिक्षा एवं मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान बना चुका है।

बहुमाध्यम उपागम में बहुमाध्यम शब्द एक से अधिक माध्यम की ओर संकेत करता है। इस उपागम में एक से अधिक तकनीकों और साधनों का प्रयोग किया जाता है। पाठ्यवस्तु को छात्रों तक पहुंचाने के लिए शिक्षक के द्वारा अनेक माध्यमों का प्रयोग किया जाता है। जैसे व्याख्यान, ओ.एच.पी., टेप रिकार्डर स्लाइड, मॉड्यूल, टी.वी., कम्प्यूटर, पाठ्यपुस्तक, फिल्म, रेडियो, सेमीनार, कार्यशाला, विभिन्न विधियाँ, प्रणालियां इत्यादि।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. बहुमाध्यम उपागम की उपयुक्तता की जानकारी प्राप्त करना।
2. बहुमाध्यम उपागम का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व प्रभाव का अध्ययन करना।
3. बहुमाध्यम उपागम का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) - प्रस्तुत शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ हैं -

1. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बहुमाध्यम उपागम की उपयुक्तता पायी जायेगी।
2. परंपरागत विधि से शिक्षण पश्चात् एवं बहुमाध्यम उपागम द्वारा शिक्षण पश्चात् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया जायेगा।
3. परंपरागत विधि से शिक्षण पश्चात् एवं बहुमाध्यम उपागम द्वारा शिक्षण पश्चात् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में अंतर पाया जायेगा।

परिसीमन (Delimitation) – यह शोध …….. के विद्यार्थियों तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process)

शोध विधि (Research Method) – प्रस्तुत अध्ययन हेतु प्रयोगात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।
न्यादर्श (Sample) – प्रस्तुत शोध हेतु कक्षा …….. 100 विद्यार्थियों का यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया तथा उन्हें निम्न दो समूहों में बांटा गया -

1. प्रयोगात्मक समूह – 50 विद्यार्थी बहुमाध्यम उपागम द्वारा शिक्षण के लिए।
2. नियंत्रित समूह – 50 विद्यार्थी परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा शिक्षण के लिए।

उपकरण (Tools) – प्रस्तुत शोधकार्य में प्रदत्तों के संकलन के लिए शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित एवं मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया है –

1. शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण – प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण के लिये शोधार्थी ने स्वनिर्मित वस्तुनिष्ठ शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण का प्रयोग किया।
2. व्यक्तित्व मापनी परीक्षण – विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के मापन हेतु Dr. Arun Kumar Singh (Patna) & Grei Differential Personality Inventory (D PI - SS) Hindi Version का प्रयोग किया गया।

चर (Variables)- प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया है -

1. स्वतंत्र चर – बहुमाध्यम उपागम तथा परम्परागत विधि
2. आश्रित चर – व्यक्तित्व व शैक्षिक उपलब्धि

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01
"शिक्षण प्रक्रिया में बहुमाध्यम उपागम की उपयुक्तता पायी जायेगी।"

उक्त परिकल्पना की पूर्ति हेतु शिक्षकों का अभिमत जानने के लिए प्रश्नावली (अभिमतावली) भरवाकर तथा विश्लेषण कर व्याख्या की गयी। प्राप्त अभिमत को सारणी में प्रतिशत में दर्शाया गया है –

(MIJ) 2016, Vol. No. 2, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

सारिणी क्रमांक -01

शिक्षकों के अभिमत हेतु प्रश्नावली		प्रतिशत में उत्तर	
क्र.	प्रश्न	हाँ	नहीं
1	क्या आपको बहुमाध्यम उपागम के द्वारा शिक्षण की जानकारी है ?	95%	5%
2	क्या परंपरागत शिक्षण की अपेक्षा बहुमाध्यम उपागम के द्वारा शिक्षण करना अधिक आसान	65%	35%
3	क्या शिक्षक को बहुमाध्यम उपागम के द्वारा शिक्षण करने में अधिक मेहनत एवं स्व-अध्ययन की आवश्यकता होती है ?	70%	30%
4	क्या बहुमाध्यम उपागम का प्रयोग करने वाले शिक्षकों को तकनीकी विषयक ज्ञान होना आवश्यक है ?	85%	15%
5	क्या परंपरागत शिक्षण की तुलना में बहुमाध्यम उपागम पर आधारित शिक्षण से शाला में विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़ेगी ?	90%	10%
6	क्या परंपरागत शिक्षण की तुलना में बहुमाध्यम उपागम पर आधारित शिक्षण से शाला में विद्यार्थी पूरे समय तक रुकेंगे ?	90%	10%
7	क्या परंपरागत शिक्षण की तुलना में बहुमाध्यम उपागम के द्वारा शिक्षण करने से विद्यार्थियों की अध्ययन रूचि को बढ़ाया जा सकेगा ?	100%	00%
8	क्या आप इस बात से सहमत हैं कि बालकों जो शिक्षा दी जाए वह रोचक एवं प्रभावपूर्ण होनी चाहिए ?	100%	00%
9	क्या परंपरागत शिक्षण की तुलना में बहुमाध्यम उपागम के प्रयोग से शिक्षक और छात्रों के आपसी संबंधों में सुधार होगा और छात्रों की झिझक कम होगी ?	90%	10%
10	बहुमाध्यम उपागम के उपयोग से विद्यार्थियों में परस्पर निर्भरता एवं सहयोग की भावना का विकास हो सकेगा ?	100%	00%
11	क्या वर्तमान विज्ञान एवं तकनीकी के युग में भी परंपरागत शिक्षण प्रदान किया जाना आपकी दृष्टि में उचित है ?	20%	80%
12	क्या शिक्षा का केन्द्र बिन्दु बालक होना चाहिए ?	100%	00%
13	क्या परंपरागत शिक्षण की तुलना में बहुमाध्यम उपागम के प्रयोग से छात्रों के व्यक्तित्व विकास एवं शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया जाता है ?	90%	10%
14	निजी शिक्षण संस्थान में नवीन तकनीक (बहु. उपा.) आधारित शिक्षण कराया जाता है तथा शासकीय शिक्षण संस्थान में नहीं क्या वहाँ के विद्यार्थियों में अंतर पाया जायेगा ?	100%	00%
15	क्या विद्यार्थी किताबी ज्ञान एवं व्याख्यान पर आधारित शिक्षण की अपेक्षा "करके सीखने" से अधिक आसानी से एवं जल्दी सीखते हैं ?	100%	00%
16	क्या बहुमाध्यम उपागम उपयोग से छात्रों में स्वाध्याय की आदत को बढ़ाया जा सकेगा ?	85%	15%
17	क्या बहुमाध्यम उपागम का प्रयोग समय , श्रम एवं धन का अपव्यय मात्र है ?	30%	70%

18	क्या परंपरागत शिक्षण की तुलना में बहुमाध्यम उपागम के प्रयोग से कक्षा का वातावरण प्रभावी होगा तथा बालक कक्षा में अधिक सक्रिय रहेगा ?	100%	00%
19	क्या आप अपने विद्यालय में बहु. उपा. पर आधारित शिक्षण दिये जाने के पक्ष में हैं ?	100%	00%
20	क्या बहुमाध्यम उपागम के उपयोग से छात्रों में आत्मविश्वास एवं कर्मठता की भावना का विकास हो सकेगा ?	70%	30%

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अधिकांश शिक्षक बहुमाध्यम उपागम शिक्षण देने हेतु सहमत हैं, व इसे रोचक व प्रभावपूर्ण उपागम मानते हैं।

परिकल्पना क्रमांक - 02

"परंपरागत विधि से शिक्षण पश्चात् एवं बहुमाध्यम उपागम द्वारा शिक्षण पश्चात् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक-02

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण की व्याख्या एवं विश्लेषण

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	df	T मान की सार्थकता
परंपरागत शिक्षण समूह	50	16.3	4.955	3.329	98	1.98 तथा 2.63 मान से अधिक अतः सार्थक अंतर है।
बहुमाध्यम उपागम आधारित समूह	50	19.4	4.35			

परंपरागत एवं बहुमाध्यम उपागम शिक्षण समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक-उपलब्धि के लिए C.R. मान 3.329 प्राप्त हुआ जो 98 df तथा मान 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी मान 1.98 से अधिक है। अतः दोनों समूहों के मध्यमान में सार्थक अंतर है। इस आधार पर परिकल्पना क्रमांक – 02 स्वीकृत की जाती है। इस प्रकार बहुमाध्यम उपागम आधारित शिक्षण समूह के विद्यार्थियों एवं परंपरागत शिक्षण समूह के विद्यार्थियों के शैक्षिक-उपलब्धि में अंतर पाया गया।

परिकल्पना क्रमांक – 03

"परंपरागत विधि से शिक्षण पश्चात् एवं बहुमाध्यम उपागम द्वारा शिक्षण पश्चात् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में अंतर पाया जायेगा।"

(MIJ) 2016, Vol. No. 2, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

सारिणी क्रमांक – 03

विद्यार्थियों के व्यक्तित्व परीक्षण की व्याख्या एवं विश्लेषण

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	df	T मान की सार्थकता
परंपरागत शिक्षण समूह	50	83.9	5.003	3.486	98	0.05 तथा 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
बहुमाध्यम उपागम आधारित समूह	50	88.0	6.65			

परंपरागत एवम् बहुमाध्यम उपागम शिक्षण समूह के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व हेतु C.R. मान 3.486 प्राप्त हुआ। यह मान 98 df तथा 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी मान 1.98 अधिक है। अतः दोनों समूहों के मध्यमान में सार्थक अंतर है। अतः इस आधार पर परिकल्पना क्रमांक – 03 स्वीकृत की जाती है। इस प्रकार बहुमाध्यम उपागम आधारित शिक्षण समूह के विद्यार्थियों एवं परंपरागत शिक्षण समूह के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में अंतर पाया गया।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं -

1. शिक्षकों की दृष्टि से शिक्षण प्रक्रिया में बहुमाध्यम उपागम की उपयुक्तता पायी गई।
2. परंपरागत एवम् बहुमाध्यम उपागम शिक्षण समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक-उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया। बहुमाध्यम उपागम आधारित (प्रयोगात्मक) शिक्षण विद्यार्थियों की उपलब्धि अधिक पायी गयी। बहुआयाम उपागम से कक्षा शिक्षण प्रभावशाली होता है। छात्र रूचि लें कर व सक्रिय बने रहते हैं जबकि परम्परागत शिक्षण में छात्र निष्क्रिय रहते हैं व रूचि नहीं लेते हैं।
3. परंपरागत एवम् बहुमाध्यम उपागम शिक्षण समूह के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर पाया गया। बहुमाध्यम उपागम शिक्षण का प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सकारात्मक प्रभाव देखा गया।

सुझाव (Suggestions) - शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. शिक्षण में बहुमाध्यम उपागम (नवाचार साधन, तकनीक) का प्रयोग एक सशक्त साधन है। इससे विद्यार्थियों, पालकों, शिक्षकों व जन सामान्य को भी परिचित कराना आवश्यक है। शिक्षकों को इस उपागम को कक्षा शिक्षण में उपयोग करने हेतु प्रेरित करना लाभप्रद होगा।

2. शासन शिक्षकों को निर्देशित करें कि आधुनिक शिक्षण पद्धतियों, नवीन तकनीकी कौशलों का प्रयोग करते हुए छात्रों को ऐसी शिक्षा प्रदान करें, जिससे विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर में वृद्धि के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व का भी विकास हो।

संदर्भ (References)

1. अग्रवाल, वंदना (2005) : पारम्परिक व्याख्यान विधि एवं कंप्यूटर सहायतित शिक्षण की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन।
2. शर्मा, पूजा (2010-11) : पारम्परिक व्याख्यान विधि एवं कम्प्यूटर सहायतित शिक्षण की प्रभावशीलता का अध्ययन।
3. Panday, Ajay Kumar (2007) : Impact of interactive radio instruction programme "English is fun" in Primary School of Chhattisgarh State.

REFERENCES

1. Agarwal, Vandana (2005): Comparative study of effectiveness of traditional lecture method and computer-aided teaching.
2. Sharma, Pooja (2010-11): A study of the effectiveness of traditional lecture method and computer-aided teaching.
3. Panday, Ajay Kumar (2007) : Impact of interactive radio instruction programme "English is fun" in Primary School of Chhattisgarh State.